श्रीहरिः ।

दयानन्द की विद्वत्ता

अर्थात् दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य

का फोटू

पं० कालूराम शास्त्री लिखित

ग्रन्थकर्त्ता की आज्ञा से ब्रह्मप्रेस इटावा में

मुद्रित हुआ।

तृतीयवार १००० } सं० १९७२ सन् १९१५ { मू०)॥

Printed and Published by B. D. S. at the
Brahma Press—Etawah.

॥ श्रीः ॥

दयानन्दकी विद्वत्ता

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं ।
द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ॥
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुः ।
तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोस्मि ॥१॥

सज्जनो ! आज चारों तरफ यह कोलाहल सुनाई देता है कि स्वामी दयानन्द एक उच्चश्रेणीके धार्मिक पुरुष देशहितैषी, विद्वान् महर्षि थे आज दयानन्द इस लोक में नहीं ताकि उन के महर्षि विद्वान् होने का आप निर्णय कर सकें जो सज्जन परलोकवासी होजाते हैं उनके सिद्धान्त उनकी विद्वत्ता उन के लिखे ग्रन्थों से जानी जाया करती है ॥

स्वामी जीके रचित ग्रन्थोंके देखनेसे मालूम होता है कि चाहे स्वामी दयानन्द कैसे भी हों लेकिन विद्वान् नहीं थे इसके प्रमाणके लिये मैं आप लोगोंको स्वामी जी कृत यजुर्वेदभाष्य दिखलाना चाहता हूं यदि इस को आप गौर से देखेंगे तो यह अच्छी तरह से जान

जावेंगे कि विद्वान् की बात तो अलहदा रही लेकिन स्वामी दयानन्दमें साधारण मनुष्यके बराबर भी बुद्धि नहीं थी । और उनकी अयोग्य और असंभव तहरीर को मानने वाले बाबुओं की बुद्धिका पता लगाना तो यह साबित करता है कि इनमें गांठकी बुद्धि बिलकुल नहीं है ये तो स्वामीजी की बुद्धिसे ही काम चलाते हैं ॥

स्वामी जी महराज यजुर्वेदका भाष्य करते हुए अ- ध्या० ६ मन्त्र० १४के अर्थमें फरमाते हैं कि गुरु शिष्य को (पायु) गुदा इन्द्रिय को शुद्ध करे क्या दुनियांकी सभ्य जातियां इस भाष्य को छी छी न करेंगी, धन्य है वेदभाष्य हो तो ऐसा ही जो इनके भाष्यमें महापाप भी धर्म है मैं दयानन्दियोंसे दर्याफ्त करता हूं कि यह काररवाई रोज रोज होती है या कोई खास समय में, वाह वाह क्या कहना है कहां तो वेदोंका वह महत्व कि दशरथ के पुत्रेष्टि करने से पुत्र हों और कहां स्वामी के घृणाके शब्द कि जिनको सुनकर धार्मिक पुरुष वेदोंको तिलांजलि देनेको तैयार हैं हमारे दयानन्दी भाई क- हते हैं कि हम वेद मानते हैं यह इन का वेद है और यह इन की सभ्यता है ॥

इसके आगे यजुर्वेद अध्या० १३ । मन्त्र० ४९में स्वामीजीने नील गाय आदि पशुओंका मारना लिखा है क्या इसका नाम हिंसा नहीं, यहां पर तो स्वामीने हिंसा को भी धर्मका अङ्ग लिख दिया ॥

इसके आगे यजुर्वेद अध्या० १४ मन्त्र० ९ में स्वामीजी अपने भाष्यमें वैश्यको ऊलेख लिखते हैं कि "पीठ से बोझ उठाने वाले ऊंट आदिके समान वैश्य„ स्वामीजीके इस लेखसे कैसी सभ्यता टपकती है ॥

स्वामीजी यजुर्वेद अध्या० १५ मन्त्र० ५ में स्त्रीको अविनाशी सुखदेने वाली लिखते हैं स्वामीजी भी अजब तमाशे के मनुष्य थे, जिस मोक्ष सुखको सब शास्त्र और सब ऋषियोंने अविनाशी सुख माना उसको तो स्वामीजीने अनित्य नाशवान् माना और स्त्री सुख को अविनाशी सुख लिखते हैं जो प्रत्यक्षके विरुद्ध है और जो न आज तक कहीं हुआ है न आगे किसीको होगा क्या हमारे दयानन्दी भाई इसमें कोई सबूत देंगे, यदि दें तो बड़ा अनुग्रह हो ॥

इसके आगे यजुर्वेद अध्या० १४ मन्त्र० ८ में स्वामीजी अपने लाडले शिष्योंके लिये फरमाते हैं कि स्त्री पति

से कहे और पति स्त्रीसे कहे कि हे स्त्री तू मेरे नाभि के नीचे गुह्येन्द्रिय मार्गसे निकलने वाले अपान वायु की रक्षा कर, इस वेदभाष्यको मानने वाले भाइयोंसे यह प्रश्न है कि क्या इतना कहते कुछ लज्जा न आवेगी और वह स्त्री अपानवायुकी रक्षा कैसे करेगी साथमें यह भी प्रश्न है कि यह रक्षा रोज मर्रह: होती है या समाजके वार्षिक उत्सव पर, ऐसे भाष्यकार को धन्य है और विशेष धन्य है इस भाष्यके मानने वालोंको।

इसके आगे यजुर्वेद अध्याय १६ मन्त्र १७ में स्वामी जी राजाके लिये लिखते हैं कि आम आदि वृक्ष कटवादे वाह वाह क्या उत्तम बात सोची है जो वृक्ष संसारको लाभ पहुंचाते हैं उन्हींको कटवादे उसी का नाम तो उपकार है मालूम होता है उस दिन * भरा लोटा पिया होगा॥

इसके आगे स्वामीजी अपने चेलोंसे पंद्रहसेर पिसवानेका डौल जमाते हैं यजुर्वेद अध्या० १६ मन्त्र ४२ के भाष्य में अपने शिष्यों को आज्ञा देते हैं कि तुम राजासे कहो कि सूअरके समान सोने वाले राजा

* स्वामीजी भंग पीते थे

वाह वाह राजा के लिये क्या ही अच्छी उपमा दी है, जिस राजाको हिन्दू ईश्वरके तुल्य मानते आये हैं और जिसके लिये भगवान् श्री कृष्णचन्द्र ने भी अपने श्री मुखसे कहा है "नराणां च नराधिपम्,, यानी मनुष्यों में राजा मेरा रूप है उसको सूअर की उपमा देना कलियुग के महर्षिसे ही हो सकता है अबमैं अपने दयानन्दी भाइयोंसे पूंछताहूं कि वह राजाके समीप कभी ऐसा कहते हैं कि नहीं, यदि नहीं कहते तो वेद के विरुद्ध करते हैं जब बात मज़हबी है तो कहना चाहिये कहें तो सही लेकिन पन्द्रह सेर की पिसाई से डर रहे हैं॥

इसके आगे यजुर्वेद अध्या०१९ मन्त्र० २० में स्वामी जी ने अपने शिष्यों को डंकेकी चोट आज्ञा देदी कि पशुओं को मारकर खाओ अब आप सोचिये कि जब तक यह पशु मारकर न खायगे यह पूरे दयानन्दी न होंगे भाष्य देखकर आरम्भ करना चाहिये इसी मन्त्र को लेकर तो समाज में एक मांसपार्टी बनी है॥

इसके आगे यजुर्वेद अध्याय१९ मन्त्र० ७६में ऐसा अश्लील

लेख लिखा है जिसे हम न तो लिख सकते और न सभामें कह सकतेहैं शोक है कि स्वामीजी अपने शिष्योंको स्त्रीके साथ भोगकरना सिखाते हैं। यजुर्वेद अध्या० १९ मंत्र ८८ में तो वेदभाष्यको कोकशास्त्र बना दिया लेकिन मैं अपने दयानन्दी भाइयोंसे यह बात पूछता हूं कि विना सिखाये तो संसार में मनुष्य कोई काम ही नहीं कर सकता अब जो वह लड़की पतिके साथ ऐसा करे तो बापके यहां से सीखकर जावे तब तो करे यहां उस को कौन सिखावे बस यही सारांश प्रश्न है। अब इसके आगे यजुर्वेद अध्या० २० मन्त्र० ९ में फिर अश्लील लिखा क्या आपके वेदोंमें अश्लील के सिवाय और भी कुछ है या नहीं यजुर्वेद अध्या० २१मंत्र४३ में स्वामी जीने अपने शिष्योंको (छागस्य) नर बकरेका घी दूध खाना लिखा है बकरिया का नहीं (छागस्य) खास बकरेका। क्या मेरे दयानन्दी भाई रोज मरद बकरे का दूध खाते हैं यदि वह नहीं खाते तो वेद के विरुद्ध करते हैं खांयगे कहां से, क्या संसार में बकरे का दूध घी होता भी है कि खाई जावेंगे बकरेका घी दूध

तो न कभी संसार में है न था, न होगा ऐसी असम्भव चीज के खाने को लिखने से ही स्वामी जी की बुद्धि का पता लगता है ऐसा तो कोई मूर्ख मनुष्य भी नहीं लिखेगा वह तो महर्षि थे तब तो कहता हूं कि स्वामी जी में बुद्धि की बहुत ही कमी थी और, महर्षि बना देना तो बाबू साहिबों के बायें हाथका कर्त्तव्य है एक स्वामीजी को ही उपाधि नहीं दी गई बल्कि अब्दुल गफूर को भी महात्मा की पदवी दी है। यह तो इनके घर का काम है पंडित को मूर्ख बनादें मूर्ख को पण्डितराज बनादें परन्तु बनाते हैं अपनी गर्ज से।

इसके आगे यजुर्वेद अध्या० २१ मन्त्र ५२ में स्त्री के स्तन (छाती) पकड़ने की विधि लिखी है धन्य स्वामीजी। आप जो चाहें सो करें क्या वेद जिन का दर्जा संसार की पुस्तकों में प्रथम है उनमें यही शिक्षा है॥

यजुर्वेद अध्या० २१ मन्त्र ६० में अपने शिष्यों के लिये लिखते हैं कि प्राण अपान के लिये (छागस्य) बकरे से और वाणी के लिये मेढ़ा से और परम ऐश्वर्य के लिये बैल से भोग करो। वाह वाह दयालु हों तो ऐसे ही हों, किस फिलासफी के साथ अपने शिष्यों का

धन बचाया है और भारतवर्ष में यह शिकायत भी पूरी और सुनने योग्य शिकायत थी कि विवाहों में रुपया अधिक खर्च किया जाता है सब चिल्लाते थे लेकिन इसका बन्दोबस्त कोई भी न कर सका परन्तु स्वामी जी ने युक्ति के साथ वह बन्दोबस्त किया है कि जिस को दूसरा करने वाला संसार में भी न मिलता अब हमारे दयानन्दी भाइयों को न तो खर्च करने की ज-रूरत और न विवाह करनेकी जरूरत दोनों आवश्य-कतायें मिट गई क्योंकि अपने वेद की विधिके वि-रुद्ध स्त्री के साथ भोग ही नहीं करेंगे जब इच्छा होगी बकरे या भेड़ या बैल के साथ भोगकर लिया करेंगे शाबाश है बहादुरी! अच्छी युक्ति निकाली लेकिन यह तो बतलाओ कि आप लोगों ने या आप के स्वामी जी ने सर्कारी कानून भी देखा है कि ऐसा करने वाले को क्या मिलता है वही १५ सेर की पिसाई तैयार है।

मुझे इस बात का बड़ा संदेह हो गया कि मेरे द-यानन्दी भाइयों को यह क्या हो गया कि उचित अ-नुचित जो कुछ भी स्वामी जी लिख गये यह सब को सत्य ही मानते हैं लेकिन आज तक इस का पता न

लगा ईश्वर की अपार कृपासे आज यह मालूम हुआ कि मेड़े महाशय की कृपा से इन की वाणी मय बुद्धि के ठीक हो गई है इस का और कोई कारण नहीं यही कारण है ।

इसके अलावा एक और भी अन्याय हो गया वह यह है कि हमारे दयानन्दी भाई तो परम ऐश्वर्य वाले हो जावेंगे और इन से भिन्न धर्म वाले गरीब रहेंगे क्योंकि इन के हाथ तो कीमिया लग गया जहां जरा भी सम्पत्ति घटी फिर बैल के साथ भोग करलेंगे और दूसरे धर्मों वाले इस निन्दित घृणा युक्त कर्म को कर न सकेंगे इस कारण और सब गरीब रहेंगे और यह ऐश्वर्यवान् होंगे चाहे कोई रोजगार करें या न करें ।

अब आप सोचिये कि ऐसे ऐसे अर्थोंके लिखने वाले स्वामी जी की बुद्धि कैसी थी हाय भारतवर्ष तेरे भाग कि जिस देशमें ऊर्ध्वरेता (जिनका वीर्य कभी नीचे नहीं आया सदा ऊपर को ही चढ़ा है) होते थे उसी देशमें क्या ऐसी निन्दित शिक्षा फैलाई जावे और ऐसी शिक्षा देने वाले महर्षि कहलावें ।

इसके आगे यजुर्वेद अध्याय २४ मन्त्र २३में स्वामीजी ने उल्लू पालनेको लिखा है क्या ही मजा है मज जगह दाल चावल की खिचड़ी अलाहिदा ही पकती है स्वामी जीने सोचा कि जो काम संसार करता है हम अपने शिष्योंको उनसे विलक्षण ही बतलावेंगे, संसारमें कोई तोता (सुआ) पालता है कोई मैना और कोई चंडूल कोई कबूतर कोई बुलबुल लेकिन हमारे दयानन्दी वेद और स्वामीजीके हुक्मसे उल्लू पालें भाई जो इच्छा हो सो पालो मजहबी बात कोई रोकने वाला है? कोई नहीं।

बाद इस के अध्या० २५ मन्त्र० १ में स्वामी जी ने फिर अश्लील शब्द लिखा है मैं अपने दयानन्दी भाइयोंसे पूछता हूं कि यह सत् शिक्षक सम्पूर्ण विद्याओं का भण्डार वेद है या कि कोई व्यभिचार शिक्षक आधुनिक पुस्तक, सज्जनो! ऐसे अर्थ करके जो वेदोंको कलङ्क लगाते हैं उनकी बुद्धिकी वृद्धि को आप ही सोच सकते हैं जिस वेदके लिये ऋषियोंका यह कथन है कि—

प्रत्यक्षेणानुमित्यावा यस्तूपायो न विद्यते।
एतद्विदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्यवेदता ॥१॥

अर्थ—जिस कार्य का उपाय प्रत्यक्ष में न हो अनुमान द्वारा भी न दीखता हो ऐसे कार्यों की प्राप्ति वेदों से होती है अर्थात् मनुष्यको अलभ्य पदार्थ वेदके अनुष्ठान से मिलता है वेद में यह वेदत्व है ॥ १ ॥ प्रमाण के लिये आप शतपथमें वृत्रासुर की उत्पत्ति देखें वृत्रासुर की कथा जैसी श्रीमद्भागवत में है वैसी ही शतपथ में है चाहे भागवत में देखो चाहे शतपथ में देखो और यह एक ही मामला नहीं यदि इतिहास पुराण देखोगे तो बीसियों ऐसे कार्य मिलेंगे कि जिनके होने की आशा ही नहीं रही लेकिन वेदके अनुष्ठानसे साधारण में सिद्ध होगये, महाराज गाधिकी पुत्री ऋचीक ऋषि को व्याही थी अब न तो गाधीके पुत्र हुआ और न उसकी पुत्रीके ही पुत्र हुआ यह हाल देखकर महर्षि ऋचीक से सत्यवती ने प्रार्थना की कि महाराज न तो मेरी माताके पुत्र, और न मेरे पुत्र ऋषिने अपनी पत्नी की इस वाणीको सुनकर उत्तर दिया कि—

गुणवन्तमपत्यं सा अचिराज्जनयिष्यति ।
समप्रसादात्कल्याणि माभूत्ते मण्योऽन्यथा ॥१॥

तवचैवगुणश्लाघी पुत्रउत्पत्स्यतेमहान् ।
अस्मद्वंशकरः श्रीमान्सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥२॥

अर्थ—यह तेरी माता गुणवान् पुत्रको शीघ्रही उत्पन्न करेगी जिससे कि तेरी प्रार्थना व्यर्थ न हो ॥१॥ और तेरे भी मेरे वंश के चलाने वाला अत्यन्त गुणवाला पुत्र होगा ॥ २ ॥

महर्षि ऋचीकने वेदके मन्त्रोंसे मन्त्रित कर चरु बनाया और स्त्रीको बुलाकर कहा कि देख यह चरु तो तेरा है और यह दूसरा तेरा माता के लिये है जब वह माता चरु देने लगी तो माता ने कहा कि पुत्रि ? यह अपने वाला चरु मुझे दे दे माताकी आज्ञा मान सत्यवतीने ऐसा ही किया इस वेद मन्त्रित चरुके खाने से दोनों गर्भवती हुईं महर्षि ऋचीकने गर्भवती देखकर शोक किया और अपनी स्त्री से कहा कि—

व्यत्यासेनोपयुक्तस्ते चरुर्व्यक्तंभविष्यति ।
व्यत्यासेपादपेचापि सुव्यक्तंतेकृतःशुभे ॥ ३ ॥
मयाहिविश्वंयद्ब्रह्म त्वच्चरौसन्निवेशितम् ।
क्षत्रवीर्यञ्चसकलं चरौ तस्यानिवेशितम् ॥ ४ ॥

त्रैलोक्यविख्यातगुणं त्वं विप्रंजनयिष्यसि ।
साचक्षत्रंविशिष्टं वै तत एतत्कृतं मया ॥ ५ ॥
व्यत्यासस्तुकृतोयस्मा–त्वयामात्राचते शुभे ।
तस्मात्साब्राह्मणश्रेष्ठं मातातेजनयिष्यति ॥६॥
क्षत्रियं तूग्रकर्माणं त्वंभद्रे जनयिष्यसि ।
नहिचैतत्कृतंसाधु मातृस्नेहेनभाविनि ॥ ७ ॥
साश्रुत्वाशोकसंतप्ता पपातवरवर्णिनी ।
भूमौसत्यवतीराजं–श्छिन्नेवरुचिरालता ॥ ८ ॥
प्रतिलभ्यचसा संज्ञां शिरसाप्रणिपत्यच ।
उवाच भार्या भर्तार गाधेयी भार्गवर्षभम् ॥९॥
प्रसादयन्त्यां भार्यायांमयि ब्रह्मविदाम्वर !
प्रसादंकुरु विप्रर्षे नमेस्यात्क्षत्रियः सुतः ॥१०॥
कामंममोग्रकर्मावै पौत्रोभवितुमर्हति ।
नतुमेस्यात्सुतोब्रह्मन्नेषमेदीयतांवरः ॥ ११ ॥
एवमस्त्वितिहोवाचस्वां भार्यांसुमहातपाः ।
ततः सा जनयामास जमदग्निं सुतंशुभम् ॥१२॥

विश्वामित्रं चाजनयद्गाधिभार्या यशस्विनी ।
ऋषेः प्रसादाद्राजेन्द्र ब्रह्मर्षिं ब्रह्मवादिनम् ॥१३॥

अर्थ-तूने चरुमें व्यत्यास (उलटा पलटी) करदी इस कारण हे शुभ तेरे संतानमें भी उलटा पलटी होगी ॥३॥ तेरा जो चरु था उसमें मैंने विश्व व्यापक ब्रह्म का निवेश किया था और तेरी माता के चरु में क्षत्रियत्व को स्थापित किया था ॥ ४ ॥ मैं ने ऐसी तजवीज की थी कि तू त्रिलोक में विख्यात गुण वाले ब्राह्मण को पैदा करेगी और तेरी माता क्षत्रिय धर्म वाले वीर पुत्रको पैदा करेगी ॥ ५ ॥ तैंने अपनी माताके—साथ में चरु बदल लिया है इस कारण तेरी माता ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ पुत्रको उत्पन्न करेगी ॥६॥ और हे भद्रे ! तू उग्र कर्मा क्षत्रिय को पैदा करेगी माताके स्नेहमें आकर जो तैंने चरु बदला यह अच्छा नहीं किया ॥ ७ ॥ सत्यवती इतनी सुनकर बड़ी दुःखित हुई कटी हुई कोमल लताके समान भूमि में गिर गई ॥८॥ जब उस को होश आया पतिको शिर झुका कर प्रणाम किया और अपने स्वामी से बोली ॥९॥ हे ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ

पैरोंमें गिर कर प्रसन्न कर रही जो मैं हूं मेरे ऊपर प्र-सन्न हो जावो मेरे क्षत्रिय पुत्र न हो ॥१०॥ जैसा आप ने कहा उग्रकर्मा क्षत्रिय मेरा पौत्र भले ही हो लेकि-न पुत्र ऐसा न हो आप मुझे यह वरदें ॥११॥ महान् त-पस्वी ऋषीको दया आई उन्होंने कहा कि ऐसा ही होगा इसके बाद सत्यवतीने जमदग्नि नामक पुत्रको जो महर्षि हुए हैं उत्पन्न किया ॥१२॥ और गाधिकी जो यश वाली स्त्री है उसने हे राजन् युधिष्ठिर! ब्रह्म-ज्ञाता ब्रह्मर्षि विश्वामित्रको पैदा किया ॥ १३ ॥

कहां तो वेदका यह गौरव कि वेद मन्त्रोंसे म-न्त्रित चरुसे जिनके पुत्र नहीं होते थे उनके पुत्र हो गये और कहां यहकि जगह २ पर अश्लील शब्दोंकी भरमार इसको ज़रा गौरसे सोचिये।

इसके आगे यजुर्वेद अध्या० २५मन्त्र० ७ में स्वामी जी अपने शिष्योंको शिक्षा देते हैं कि अंधे सांपोंको गुदासे पकड़ा करो गुरु हो तो स्वामी कैसा हो और शिष्य हों ऐसे ही हों जैसे हमारे दयानन्दी भाई म-गर ऐसे धार्मिक दयानन्दी कम हैं जो इस कारस्वाई को अमलमें लाते हों।

यजुर्वेद अध्या० २५ मन्त्र ४४ में स्वामीजीने अपने शिष्यों को एक एक गधा बांधना लिखा है क्यों इस का क्या होगा बांधो मित्रो गधाभी बांधो जिस देशमें घर२ गौएं बंधा करती थी अब गधा बंधेंगे।

यजुर्वेद अध्या० २७ मन्त्र३४ में विद्वान्को जमाईके समान लिखा हैकि ऐसा मानो लेकिन कोई दयानन्दी भाई मानता दिखलाई नहीं देता।

यजुर्वेद अध्या०३७मन्त्र०७में ईश्वर हमारे भाइयों को घोड़ेकी लीदसे तपाता है शाबाश है ईश्वरको और धन्य है ऐसे भाष्यको जिसके हुक्मसे हमारे भाई रोज तापते हैं।

यजुर्वेद अध्या० २९ मन्त्र ४० में स्त्री माताके तुल्य की उपमा योग्य है या अयोग्य आप ही विचारें।

यजुर्वेद अध्या०२८मन्त्र३२ में स्वामीजी मनुष्योंको समझाते हैं कि जैसे बैल गायको गाभिन करता है ऐसे ही तुम स्त्रियोंको करो लेकिन हमारे दयानन्दी भाई अभी उस तरीके से काम नहीं लेते।

यजुर्वेद अध्याय २६ मन्त्र २ में स्वामीजी ने निराकार ईश्वरका ब्याह कर दिया क्योंकि इस मन्त्रमें ईश्वरके स्त्री लिखी है।

सज्जनो ! प्रायः दयानन्दी भाई यह कहा करते हैं हमारा धर्म पुस्तक वेद है और हम जितने काम करते हैं वेदके अनुकूल करते हैं यह इनका वेद है जब तक यह इसके अनुकूल काम न करेंगे हर्गिज भी वैदिक नहीं होंगे ।

स्वामीजीने वेदमें अनुचित शिक्षा दिखलाकर लोगों को घृणा करवाई है लेकिन यह याद रहे कि इस मन्त्र के यह अर्थ हर्गिज नहीं यह स्वामीजी की गढ़न्त है इस कारण यह अर्थ माननेके लायक नहीं और जिन्हों ने यह अर्थ किये हैं उनको महर्षि कहना महर्षि शब्द की इज्जत उतारना है अब आप सोच सकते हैं स्वामी जी में कितनी बुद्धि थी ।

भवदीय—कालूराम शास्त्री

श्रीहरि

अनोखा भाष्य स्वामी जी ने वेदोंका बनाया है
कहें क्या शर्म आती है कलंक इस पर लगाया है १ ॥
महीधर और सायणभाष्यको बतलाते थे कल्पित ।
नडाली दृष्टि अपनी पर-नशा आंखोंमें छाया है २ ॥

कहीं पर आम आदिको कटा देनाकी आज्ञा दी।
कहीं बकरेका घी और दूध पवलिकको चखाया है॥
"अहिंसा परमोधर्मः" जिन ऋषि मुनियोंकी शिक्षा थी।
वहीं नीच गायोंका हनन हा!हा!!! कराया है॥
जहां जिज्ञासुओं को ब्रह्मकी पहिचान देते थे।
गुदाका शुद्ध करना आप स्वामीने बताया है॥
कहीं पर स्त्रीके कुच पकड़नेकी विधि लिखकर।
हमारे हाय वेदोंको घृणित कैसा बनाया है।
कहीं पर स्त्रीमुख नित्य लिखकर उफरी विद्वत्ता
न खुदको बल्कि वेदों तकको अन्योंसे हंसाया है।
गुदासे सांप पकड़ावे अनोखा है संपेरा यह।
गधेको पालना लिख हाय धोवी ही बनाया है।
कहीं तशवीह राजाको सुअरसे दी "महर्षि" ने
कहीं विद्वान्को दामाद कह करके चढाया है।
बताया भोग बैलों और भेढ़ों और बकरों से।
हमें हा! हन्त!!! कैसा कार्य स्वामीने सिखाया है।
किया तो भाष्य स्वामीने है उसका आज कुछ ब्योरा।
सनातनधर्मी भ्राताओंको "वर्मा" ने दिखाया है।
भवदीय—कुन्नीलाल "वर्मा" सिहरोना—अमरौधा